राजभाषा विविधा

अंक 20 राजभाषा विभाग, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड वर्ष 2016-17

अपनी बात

प्रिय मित्रों, "राजभाषा विविधा " के गतांक में हमने सितम्बर माह में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा के अंतर्गत के शुभारम्भ और समापन समारोह से आप सभी का परिचय करवाया था.

इस अंक में हम आपके लिए राजभाषा पखवाड़ा की सभी प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों की संक्षिप्त झलक लेकर हाजिर हुए हैं, जिनसे आप सभी परिचित हो सकेंगे.

साथियों, जैसा कि आप जानते ही हैं कि, 29 सितम्बर को राजभाषा पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया था. उसके तुरन्त बाद अक्टूबर माह में कोयला मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की राजभाषा गतिविधियों की वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा की गई. समीक्षा बैठक में निर्धारित तिथियों में वेकोलि के निदेशक (कार्मिक) डॉ. संजय कुमार एवं क्षेत्रीय कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे. समीक्षा बैठक का कार्यवृत यद्धपि सभी क्षेत्रीय महाप्रबंधकों और वेकोलि मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्षों को भेज दिया गया है, जिसमें वेकोलि की राजभाषा स्थिति का मूल्यांकन किया गया है. राजभाषा विविध के अगले अंक में सभी के आलोकनार्थ इसे प्रस्तुत किया जाएगा.

साथियों, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के तहत वेकोलि काफी हद तक कार्य करने में सफल रही है, लेकिन अभी काफी कार्य किया जाना आवश्यक है, जिसके लिए हमें हमारी कंपनी में आ रहे नए अधिकारियों और कर्मचारियों को इस दिशा में प्रवृत करने की अत्यंत आवश्यकता है.

मित्रों, मुझे आपको यह जानकारी देते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि, वीडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान कोयल मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीयों द्वारा हमारी इस ई-पत्रिका "राजभाषा विविधा" की भूरी-भूरी

राजभाषा विविधा

प्रशंसा की गई. अत: अप सभी से अनुरोध है कि, अपनी कंपनी की इस ई-पत्रिका को और अधिक शिखर पर ले जाने के लिए आप अपनी रचनाओं (कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, आलेख, सुझाव आदि) को निसंकोच राजभाषा विभाग में दे सकते हैं. हम आपके विचारों को डिजिटल पंख प्रदान कर जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करेंगे, जिससे अन्य लोग भी लाभान्वित हो सकेंगे.

अत: आपसे पुनः आग्रह है कि, अपनी कोई न कोई रचना हमें अवश्य प्रदान करें.

आज के आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में राजभाषा में कार्य करना अंगेजी भाषा से काफी सरल है. आज हम ने केवल यूनिकोड का प्रयोग कर सरलतापूर्वक टाइपिंग (टंकण) कर सकते हैं. अपितु, आज के आधुनिक स्मार्ट मोबाइल में ऑफ लाइन वायस हिंदी टाइपिंग (बोलकर टाइपिंग) भी कर सकते हैं. अत: गूगल पर प्रस्तुत नि:शुल्क सेवाओं का लाभ लेते हुए हम अपने दैनिक कार्यों को सरलता पूर्वक राजभाषा हिंदी के कर सकते हैं. आप अपने लघु प्रयासों से, इस राजभाषा रूपी महायज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें और राजभाषा को वास्तविक अर्थों में उसका अधिकारिणी पद हासिल करने में सहयोग करें.

मित्रों, "राजभाषा विविधा" के इस अंक में हम आपके लिए अक्तूबर माह में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और वेकोलि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित चित्र पर आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता की तीन कहानियाँ प्रमुख भी ले कर आये हैं. इस प्रतियोगिता में नागपुर के विभिन्न कार्यालयों से आये प्रतिभागियों को दो चित्र दिए गए थे, जिनपर प्रतिभागियों ने अपनी लेखनी का जादू बिखेरा. आशा हैं आपको ये कहानियाँ अवश्य पसंद आयेंगी. इस आलोक में भी हमें आपके बहुमूल्य सुझावों का इंतजार रहेगा.

नवंबर माह में हालावाद के प्रवर्तक डॉ. हरिवंश राय बच्चन का जन्मदिन आता है इस अंक में आप श्रद्धेय बच्चन पर भी विशेष आलेख पढ़ने को मिलेगा.

सादर,

आपका

इकबाल सिंह

(महाप्रबंधक कार्मिक एवं राजभाषा प्रमुख)

राजभाषा विविधा

डॉ. हरिवंश राय बच्चन
- हालावाद के प्रवर्तक

हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर 1907 को इलाहाबाद के पास प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव पट्टी में हुआ था। यह श्री प्रताप नारायण श्रीवास्तव और श्रीमती सरस्वती देवी के बड़े पुत्र थे। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ "बच्चा या संतान" होता है। बाद में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हुए । 1926 में 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा देवी से हुआ जो उस समय 14 वर्ष की थी। लेकिन 1936 में श्यामा की टी.बी के कारण मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद 1941 में बच्चन ने पंजाब की तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। इसी समय उन्होंने "नीड़ का पुनर्निर्माण " जैसे कविताओं की रचना की। तेजी बच्चन से अमिताभ तथा अजिताभ दो पुत्र हुए। अमिताभ बच्चन एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं। तेजी बच्चन ने हरिवंश राय बच्चन द्वारा 'शेक्सपीयर' के अनुदित कई नाटकों में अभिनय भी किया है।

उन्होंने 1938 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम. ए. किया। बच्चन जी 1952 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवक्ता रहे। कुछ समय के लिए हरिवंश राय बच्चन आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से सम्बद्ध रहे। 1955 ई. में वे विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ होकर दिल्ली चले गये। विश्वविद्यालयों के दिनों में इन्होंने कैम्ब्रिज जाकर 1952-1954 ई. में अंग्रेज़ी कवि यीट्स पर शोध प्रबन्ध लिखा , जो काफ़ी प्रशंसित हुआ।

अपनी काव्य-यात्रा के आरम्भिक दौर में वे "उमर ख़ैय्याम " के जीवन-दर्शन से बहुत प्रभावित रहे और उनकी प्रसिद्ध कृति, "मधुशाला" उमर ख़ैय्याम की रूबाइयों से प्रेरित होकर ही लिखी गई थी। मधुशाला को मंच पर अत्यधिक प्रसिद्धि मिली और बच्चन काव्य प्रेमियों के पसंदीदा और लोकप्रिय कवि हो गए। मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत , सतरंगिनी, विकल विश्व, खादी के फूल, सूत की माला, मिलन, दो चट्टानें व आरती और अंगारे इत्यादि बच्चन की प्रमुख कृतियां हैं। कवि की निम्न पंक्तियों में कवि का परिचय इस प्रकार मिलता है:

राजभाषा विभाग

मिट्टी का तन मस्ती का मन...
संसृति की नाटकशाला में
है पड़ा तुझे बनना ज्ञानी
है पड़ा मुझे बनना प्याला
होना मदिरा का अभिमानी
संघर्ष यहां कितना किससे
यह तो सब खेल तमाशा है
वह देख, यवनिका गिरती है
समझा, कुछ अपनी नादानी !

छिपे जाएंगे हम दोनों ही
लेकर अपने अपने आशय
मिट्टी का तन, मस्ती का मन
क्षणभर, जीवन मेरा परिचय।

हरिवंश राय बच्चन को उनकी कृति "दो चट्टाने" को 1968 में हिन्दी कविता के लिए "साहित्य अकादमी पुरस्कार " से सम्मानित किया गया। उन्हें "सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार" तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के "कमल पुरस्कार" से भी सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउन्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लिये उन्हें सरस्वती सम्मान प्रदान किया। 1955 में इंदौर के "होल्कर कॉलेज" के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने हरिवंश राय बच्चन को कवि सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया था। हरिवंश राय बच्चन को भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। आप राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे। हरिवंश राय बच्चन का 18 जनवरी, 2003 को मुंबई में निधन हो गया था। बच्चन व्यक्तिवादी गीत कविता या हालावादी काव्य के प्रवर्तक कवि हैं। प्रस्तुत है उनकी एक कविता :

साथी, घर-घर आज दिवाली!

फैल गयी दीपों की माला
मंदिर-मंदिर में उजियाला,
किंतु हमारे घर का, देखो, दर काला, दीवारें काली!
साथी, घर-घर आज दिवाली!

हास उमंग हृदय में भर-भर
घूम रहा गृह-गृह पथ-पथ पर,
किंतु हमारे घर के अंदर डरा हुआ सूनापन खाली!
साथी, घर-घर आज दिवाली!

आँख हमारी नभ-मंडल पर,
वही हमारा नीलम का घर,
दीप मालिका मना रही है रात हमारी तारोंवाली!
साथी, घर-घर आज दिवाली!

प्रस्तुति : डॉ. मनोज कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा विविधा

अंतर आत्मा

नवामुंडी झारखंड का एक पहाडी इलाका जिसकी हरियाली ही वहां के ग्रामीणों की जिंदगी है ---- यही कृष्णा का भी घर है। पहाड से लगकर --- पत्नी और बच्चों के साथ कृष्णा तब से यही जिंदगी बसर कर रहा है। जब से उसकी शादी हुई है। खेती के अलावा कुछ और कार्य की आवश्यकता उसे तब महसूस हुई जब इसी पहाडी की दूसरे छोर पर रह रहे कृष्णा के पिता को लकवा मार गया --- माँ का पूरा समय पिता की देखभाल में बीतता तब कृष्णा को लगा सिर्फ खेती पर निर्भर हो वो दो परिवार नहीं चला सकता।

कृष्णा ने इस गांव के बगल में बसे दूसरे गांव में जाकर दूध और दही बेचने का काम शुरू किया। कृष्णा के पास इतना धन नहीं था कि वो गौ-पालन कर सके अत: वो बगल के गांव के ठाकुर के यहां से दूध और दही खरीदता और अपने और बगल के गांवों में घूम घूम कर बेचता।

पत्नी प्रणीता इस कार्य में पति को सहयोग देती और खेती का काम स्वयं सम्हाल लेती। बच्चों के लिये गांव में ही एक स्कूल था जिसे एक समाज सेवक चला रहा था। सभी अपने काम में व्यस्त रहते।

कृष्णा का काम कठिन था क्योंकि उसे अपने गांव से बगल के गांव तक की यात्रा पैदल ही करनी पडती थी। गांव के बीच जो पगडंडी सा मार्ग था जिसके दोनों ओर कृषि थी --- वहां साईकिल या अन्य किसी वाहन से जान संभव नहीं था। इसीलिए कृष्णा झंवर पर दो बडे मिट्टी के लंबे सुराहीनुमा बर्तन लगाकर काम पर निकल पडता।

तेज धूप हो या बारिश कृष्णा को तो काम करना ही पडता था ---- पूरे गांव में दूध दही बेचते बेचते कभी कभार तो रात हो जाती जब कृष्णा घर लौटता। कभी कभार जब किस्मत साथ देती दोपहर तक सारा माल बिक जाता और कृष्णा घर लौट आता।

एक सावन इतनी तेज बारिश हुई कि पूरी पगडंडी में कीचड भर गया --- तेज बारिश ने गांव की फसल को भी काफी नुकसान पहुंचाया पर बीमार पिता की दवा दारू व बच्चों के पेट को ध्यान में रखते हुए कृष्णा काम पर जाता रहा। एक दिन ऐसे ही काम से लौटते हुए कृष्णा का पैर पगडंडी से फिसल गया ---- पूरा खेत तो जैसे दलदल ही हो गया था----- कृष्णा मिट्टी से बने पात्रों को बचाने का पूरा प्रयास कर रहा था इस प्रयास में वो दलदल में फंसता जा रहा था ----- किसी तरह कृष्णा ने स्वयं को अपने पत्रों को बचाय ---- तभी लगा पैर में कुछ अटक रहा है ---- लंबा सा----- जैसे कोई सांप हो----- अब कृष्णा अपने को बचाने के लिए मिट्टी के बर्तनों की परवाह न करते हुए तेजी से पैर को उपर खींचा तो दंग रहा --- एक लंबी सी सुनहरी माला थी ---- पीतल की होगी--- कृष्णा ने पगडंडी पर बैठते हुए देखा--- माला बहुत ही सुंदर थी उसमें लाल और हरे नग जडे हुए थे। कृष्णा उसे अपनी धोती में खोंस लिया--- दोनों बर्तन भी सही सलामत थे---- सोचा दिन तो बुरा नहीं गया है।

दलदल से भी निकल आया है और प्रणीता के लिये एक पीतल का हार भी मिल गया। सालों से प्रणीता गले में एक लाल या पीले रंग का

मोटा सा धागा बांधती है , जिस पर साई बाबा एक एक लॉकेट टंगा रहता है ---- यह हार पायेगी तो खुश होगी। अब तक तो ऐसी हालत ही ना थी कि उसे पास के गांव के बाजार से एक हार खरीद कर दे सके---- ये घर सुंदर है---- प्रणीता पर खुब फबेगी। कृष्णा उसे कई बार कमर से निकालकर देख लेता----

घर पहुंचा तो सांझ हो गई--- बाढ जैसी हालत से प्रणीता अपने घर के बाहर ही खडी कृष्णा का इंतजार कर रही थी। घर पहुंचते ही कृष्णा ने कंधे का बोझ उठाकर नीचे रखा तो प्रणीता की आंख भर आई कंधे छिल गये थे---

"तुम कितना काम करते हो ---- अपनी परवाह करते ही नहीं ---- देखो तुम्हारे कंधे कितने छिल गये हैं --- ठहरों मै मलहम ले आउं-----"

"नहीं प्रणीता ----" प्रणीता का हाथ पकडते हुए कृष्णा बोला, " पहले तुम यहां बैठो मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूं ----"

"क्या है जी ------" प्रणीता उत्सुकता से भरकर कृष्णा के बगल बैठ गई।

"ये देखो ----" कृष्णा ने कमर पर से हार निकालकर प्रणीता की ओर बढा दिया---- "ये सोने का है क्या "

"सोने का हार इस पहाडी इलाके में कहां से आयेगा पगली ----- पीतल होगा ----- " कृष्णा ने हार को अपनी धोती पर पोछते हुए कहा।

" ठहरो तुम्हारी धोती तो पहले से मैली है। मैं इसे झरने के जल से धोकर लाती हूं " प्रणीता दौडते हुए गई हार धोकर ले आई ---- अब तो वो हार चमकने लगा था ---- कृष्णा दंग रह गया उस चमक को देखकर लेकिन प्रणीता की आंखों में भय सा नजर आया ----

"जी यह पीतल नहीं है---- यह सोने का है---"

"क्या बात करती है ------ तुझे कैसे पता ----" कृष्णा आश्चर्य से पूछा

" मैने जलसे के गांव की ठकुराईन के गले में यही हार देखा था ---- सोने का ही है ----- आज की कीमत में लाखों का हार होगा-----"

" पर वो यहां खेत पर आया कैसे होगा------ " कृष्णा ने पूछा।

" पता नहीं---- पर यह सोने का ही है-----

दोनों देर तक हार को लेकर वहीं बैठे रहे----कई प्रकार के भाव मन में आ जा रहे थे --- यदि इसे शहर ले जाकर बेच दिया तो इस पहाडी इलाके से निकल किसी अच्छे गांव में जाकर रह सकते हैं--

इस पहाडी इलाके में टपरी के मकान का कोई किराया नहीं है इसीलिए यहां पडे रहते हैं। साथ ही बाबूजी का इलाज भी किसी अच्छे अस्पताल में हो सकता है----- बच्चे गांव के ही किसी स्कूल में पढ सकते हैं। अगर सचमुच में सोने का हुआ तो यह सब हो सकता है----।

" प्रणीता---- तुम क्या सोच रही हो---"

कृष्णा ने अपने विचारों को छुपाने का प्रयास करते हुए पूछा।

" सोच रही थी----- भगवान को आखिर हम पर दया आ ही गई-----"

" हॉ प्रणीता------ मुझे भी यह लग रहा है-----"

'चलो खाना खा लो -----'

" तुम खाना रखो मैं झरने से नहा आंउं ---- " कृष्णा ने कहा।

रात दोनों की आंखों में निंद ना थी। बुरा वक्त बीतने वाला था। सुनहरा जीवन आने को था---

प्रतिलिपि

-- बस निर्णय के साथ कुछ कदम बढाने थे।प्रणीता के मन में बार बार यह ख्याल भी आ रहा था कि कहीं ठकुराईन इस हार के वियोग में रो धो तो नहीं रही होगी?
पर ना---- वो क्यों रोयेगी वो तो धनवान है। ऐसे तो असंख्य हार होंगे उसके पास--- प्रणीता सोने का प्रयास करती है----
निर्णय गलत भी हो सकता है पर --- कृष्णा के कांधे का जख्म उसे यह विश्वास दिला रहा था कि हो न हो यह लक्ष्मी माता का आशीर्वाद ही है।
" सुबह उठे तो दोनों की आंखें भारी थी। रात भर सोये नहीं थे ना----
"क्या करूं------ बताओं---" कृष्णा ने पूछा।
"नहीं कुछ निर्णय नहीं ले पा रही हूं----
" इस हार ने हम दोनों की रात की निंद उडा दी है--- है ना-----"
" कुछ गलत करेंगे तो शायद कभी सो नहीं पायेंगे----"
प्रणीता ने कृष्णा के कंधे के घाव को सहलाते हुए कहा।
" सच कहती हो---- हम कर्म करते चलें----फल हमारा नहीं है ना----- कृष्णा ने कहा
"अब बताओ तुम इस हार का क्या करोगे?"
"पुलिस थाने में जमा करवा देता हूं-----'
" यही ठीक रहेगा-----नहीं गांव के सरपंच को दे देना कहना शायद ठकुराईन का है----"
"हॉ सच यही ठीक रहेगा"
" गरीबों की भी अंतरआत्मा होती है। कोई माने या ना माने। हम खेतीहरों को मेहनत ही रास आती है "

दोनों बातें कर रहे थे ---- मन में खुशी थी कि निर्णय ले लिया---- सही निर्णय। अपने धोती में हार को खोंसते हुए कृष्णा फिर से अपने काम में निकल गया---- खाली मिट्टी के बर्तन लिये। ठाकुर भी इंतजार कर रहे होंगे ---- दूध और दही के साथ ---

आज धूप खिल आई थी --- खेतों का पानी उतर गया था ---- कृष्णा खुश था उधर प्रणीता भी----
यह खुशी अंतरआत्मा के जागने की थी। गरीब के अंतर आत्मा के जागने की।

निर्मला सुरेंद्रन
कार्यालय अधीक्षक
वेस्टर्न कोलफील्डस लिमिटेड

****

राजभाषा विशेषांक

माँ

कुछ समय पहले की बात है , पंछी नगर नामक गांव था, वहां ठंड का मौसम में अलग अलग प्रकार के पंछीयों का हर साल जमावडा हुआ करता था , उस गांव में काफी ठंड के मौसम में हरीयाली और फल फुलों के बाग हुआ करते थे। गांव के लोग काफी दयालू थे। पंछीयों की देखभाल बहुत ही अच्छी तरह किया करते थे। वह गांव काफी कम आबादी वाला गांव था , वहां के लोग खेती बाडी किया करते थे । गांव में किसान वर्ग के लोग थे, उस गांव में हर साल काफी बारीश हुआ करती थी, इस वजह से उस गांव के तालाब और नदियां काफी पाणी से भरी हुई रहती थी। गांव के तालाब में काफी मछलियां होती थी। पंछी और बदक और जंगल के प्राणी उसी तालाब में पानी पीने आया करते थे। गांव की चिडियों और प्राणियों की चहल पहल रहती थी , गांव में काफी समय से एक बदक का जोडा हुआ करता था। तालाब की मछलियां खाता था। कुछ समय बाद उस बदक को नौ बच्चे बदक के हुए, वह काफी खुशी से रह रहे थे और कुछ ही दिनों बाद गांव में शहर से कुछ लोग गांव में आये और वह उस गांव में तालाब के किनारे फैक्ट्री लगवाना चाहते थे। इस वजह से वह गांव की जमीन खरीदना चाहते थे और वहां फेक्ट्री लगवाना चाहते थे। कुछ गांव के लोगों ने अपनी जमीन पैसों के लालच में आकर अपनी जमीन बेच दी, देखते ही देखते कुछ ही महिनों में वहां फेक्ट्री बन गयी उस फेक्ट्री को चलाने के लिए तालाब का ही पानी इस्तेमाल करने लगे। कुछ दिनों में तालाब का पानी काफी खराब होने लगा और तालाब में रहने वाली मछलियां खराब पानी की वजह से मरने लगी, पानी में रह रहे बदक का जोडा बीमार पडने लगा । बदक के जोडे में से नर बदक दुषित पानी पीने की वजह से मर गया , इसके बाद मादा बदक ने तालाब में आना छोड दिया, बदक के नौ बच्चे और मॉ बदक गांव में ही घूमने लगे। जो भी सुखा मिलता वह खा कर जीवन जीने लगे थे। कुछ दिनों बाद गांव की फेक्ट्री को बडा करने के लिए गांव के जंगल के पेड और नदी को काटने का काम करने लगे। देखते ही देखते गांव में से हरियाली का नामो निशान मिटने लगा और गांव में शहरी गाडीयां आने लगी गांव की धूल भरी सडक अब सिमेंट और डामर की होने लगी। इस वजह से गांव में हर साल आने वाले पंछी और जानवर वहां आना बंद होने लगे। इस में मॉ बदक के गांव में धुये भरे माहोल में बदक के बच्चों का दम घुटने लगा और बच्चे बीमार पडने लगे इस वजह से बदक को उस गांव में ना तो तालाब रहे और ना ही नदीयां । नदी और तालाब नालों का रूप ले चुके थे इसलिए मॉ बदक ने एक दिन गांव छोडने का निर्णय लिया और एक दिन वह गांव छोड अपने बच्चों के साथ दूसरी जगह निकल पडी । मॉ अपने बच्चों को दरबदर की ठोकरे खाकर भी सम्हाल कर दूसरी अच्छी जगह ले गयी

लेकिन हम लोग अपने स्वार्थ के खातिर दूसरों का खयाल न करते हुए अपनी ही धरती मॉ पर सितम धोते है और धरती को खराब करते है। यदि हम इसी तरह अगर अपनी धरती मॉ को प्रदूषित करते रहे तो धरती पर नदी, तालाब, नाले की रूप ले लेंगे और आगे हम इन्सानों को भी बदक मॉ की तरह दर बदर की ठोकरे खाने पर मजबूर होना पडेगा।

यदि हमें इस बदक माँ की तरह वन वन की और दर बदर की ठोकरे ना खानी पडे तो आज यह प्रण लेना होगा कि जंगलों और नदी, तालाबो की रक्षा करेंगे और जंगल नहीं काटेंगे, पेड नहीं काटेंगे और पानी नदी तालाबों का खराब दूषित नहीं करेंगे और पक्षी और प्राणियों की सुरक्षा करेंगे ऐसे ही किसी पक्षी नगर को उजडने नहीं देंगे और पेडो को लगवायेंगे और नदी और तालाबों को बढाये ये उनमें का प्राणी ,खराब नहीं होने देंगे।

बदक माँ की तरह किसी पक्षी और जानवर को दर बदर की ठोकरे नहीं खाने देंगे, बदक की अगर हम इन्सानों की वजह से इतना बुरा हाल हुआ है तो हमने इन्सानों ने इसका ध्यान रखना चाहिए और उन्हें दर बदर की ठोकरे खाने से बचाना चाहिए।

हर इन्सान ने इसी तरह एक भी पेड पौधा लगाया तो वर्षा सतु हमेंशा बस्ती रहेगी और हरियाली कायम रहेगी वर्षा आने की वजह से नदी नाले तालाब में पानी की मात्रा ज्यादा रहेगी और मॉ बदक जैसे पछीयो को रहने का ठीकाना मिल जाएगा और गांव और शहरों में पक्षियों और जानवरों का जमावडा बना रहेगा जो पक्षी प्राणी इस वहज से विलुप्त हुए है वह फिर से दिखायी देने लगेग और हमें इस तरह के दृश्य देखने के लिए नहीं मिलेगे और यदि हम यह बस होने से बचायेगे तो हमें यह चित्र कुछ इस तरह का दिखा देगा।

वाय एस नारायणपुरे
सुरक्षा प्रहरी
नीरी नागपुर- 20

****

खुशी के फुल

जेठ का महीना तो पहले भी तपता था, लेकिन इस बार मानों सूरज ने जिद पकड ली थी कि वह जीवन रस को पूरी तरह से सोख लेगा। पहले तो छोटे छोटे पोखर फिर बडे तालाब सभी अपना संचित जल भी यू क हें कि अपनी जमा पूंजी गंवा चुके थे। जैसे जैसे समय गुजर रहा था चारो ओर हरियाली की नमी के स्थान पर शुष्कता अपने पांव पसारती जा रही थी , यदयपि सोमपुर गांव अपनी हरियाली के लिए जाना जाता था, चारों ओर पहाड की गोद में बसा यह गांव सदैव हरीतिमा धारण किए रहता था और इसकी हरियाली को हरा रंग भरने में जो सुखदा नदी का बडा योगदान था जो नीचे पहाड की तलहटी से होकर गुजरती थी। पिछले पांच वर्षो से लेकिन इस गांव को ना

राजभाषा विविधा

जाने किसकी नजर लगी कि हरियाली जो सदा छायी रहती थी वर्षा के अभाव में पीली शुष्कता में बदल गई। जैसे स्वस्थ मनुष्य शनैः शनैः पांडु रोग के प्रभाव से आज खोकर पीला पड निस्तेज हो जाता है।

सोमपुर गांव की आबादी ज्यादा तो नहीं परन्तु कच्चे पक्के लगभग तीन सौ घर का एक समूह था। इन्हीं कच्चे पक्के घरों के बीच एक झोपडी में सुखिया भी अपनी इकलौती बेटी के साथ रहता था , पत्नी बेटी के जन्म के बाद ही स्वर्ग सिधार गई तब से वही बेटी के लिए मातृ पितृ तुल्य था। सुख्या वैसे तो खेतों में मजदूरी कर जीवनयापन करता था परन्तु पिछले पांच वर्षो में अकाल का जो तांडव रहा उससे उसके हाथ का वह काम भी जाता रहा।

सुखिया की बेटी ने झोपडी के बाहर से आवाज लगाई " बापू ओ! बापू, देखो तुमसे मिलने कौन आया है ?

सुखियां ने झोपडी की खिडकी से झांका गांव का जमीदार खडा था , सुखिया दौडा दौडा सा झोपडी से बाहर आया और हाथ जोडकर बोला - " मालिक आप यहां ? आपने मुझे बुलवा लिया होता "
जमीदार ने कहा- सुखिया प्यासे को कुएं के पास जाना होता है, कुआ कब प्यासे के पास आता है"

" सुखिया इस गर्मी आसपास तो जल रहा नहीं किन्तु यहां से पांच किलोमीटर दूरी पर गहराई में सुखदा नदी में जल है , क्या तुम मेरे लिए वहां से जल ला सकोगे ।
मैं तुम्हे एक मटके जल का पच्चीस रू दूंगा। सुखिया ने एक पल भी विचार किए बिना हामी भर दी क्योंकि पिछले कई दिनों से उसके पास काम का अभाव था, घर में फांके पडने की नोबत आ चुकी थी फिर खुद तो कैसे भी चला लेता पर बेटी की भूख की पीडा बर्दाश्त करना उसके वश में नहीं था।

ठीक है मालिक , मैं कल सुबह आ जाउंगा, सुखिया ने कहा। और हां मटकों का इंतजाम तुम्हें ही करना है , सुबह सीधे पानी लेकर ही आना, जमींदार ने कहा।

जमींदार का यूं आना तथा घर बैठे काम मिल जाना सुखिया के लिए ऐसा था जैसे लंबे सूखे के बाद धरती पर वर्षा का होना उसने आसमान की ओर देख ईश्वर को धन्यवाद दिया और कल के लिए तैयारी में लग गया। झोपडी के कोने से उसने दो मटकों को उठाया जो मानों उसी की बाट जोह रहे थे फिर रस्सी से उनके बांधा तथा एक लकडी के मजबूत डंडे से उसे बांधकर सुबह होने की प्रतीक्षा करने लगा।

अलसुबह वह उठ बैठा आज चिडिया की चहचहाट में एक खुशी झलक रही थी , सुखिया सोच रहा था कि मन खुश हो तो सब ओर खुशी दिखाई देती है और यदि मन दुखी तो सारा जगत दुखमय दिखाई देता है। इसी तंद्रा में बेटी ने करवट बदली और वह भी उठ बैठी और साथ चलने की जिद कर बैठी और सुखियाउसे समझाता रहा कि देख अभी से सूरज तप उठा है और नदी से

लौटते हुए तो गर्मी प्रचंड रूप धारण कर लेगी पर बेटी ने जो जिद पकडी तो वह भी बाल हठ के आगे झुक ही गया। दोनों पिता पुत्री घर से सुखदा नदी की ओर चल पडे , और कुछ समय पश्चात वे नदी के किनारे थे पर आज दूर दूर तक रेतीली भूमि नजर आ रही थी जैसे, बुढापा यौवन को छीन लेता है वैसे ही सूखे ने नदी के यौवन को मानों छीन लिया था। दूर नदी के बीच पानी की एक पतली धारा प्रवाहमान थी , दोनों पिता पुत्री उस ओर बढ चले। सुखिया ने घडों में जल भरा और चल पडा आगे आगे सुखिया और पीछे पीछे उसकी बेटी। अभी नदी की रेत पार ही की थी कि बेटी ने पुकारा " बापू जरा रूको। देखो! एक घडे से पानी रिस रहा है" सुखिया ने रूक कर देखा घडे की ओर पतली सी दरार जो सामान्य आंखो से तो नहीं पर हॉ पानी की बूंद उसी ओर से आ रही थी और वह बूंद धरती पर गिर यूं हवा हो रही थी जैसे, गर्म तवे पर पानी की बूंद।

समय और गर्मी का ध्यान में आते ही वह तेजी से जमींदार की हवेली की ओर चला शीघ्र ही जल उन्हें सौंपा पर यह क्या जमींदार ने कहा - तुम्हारे एक घडे में तो पानी आधा ही रह गया है , इसका तुम्हें पूरा पैसा नहीं मिलेगा ।सुखिया ने लंबी सांस भरते हुए कहा - ठीक है मालिक, शीघ्र ही पिता पुत्री बाजार से सौदा लेते हुए घर की ओर चल पडे। रात्रि में सुखिया ने सोचा मेरे पानी से कितनी तृष्णा शांत हुई हो पता नहीं पर लंबे अरसे के बाद पुत्री की क्षुदा पूर्ति से वह काफी तृप्ति महसूस कर रहा थ। अब सुखिया का रोजाना नदी की ओर जाना पानी लाना जमींदार के यहां पहुंचाना , पैसे लेकर घर आना रोजमर्रा का काम हो गया।

एक दिन जब सुखिया नदी से जल भरकर लौटा रहा था तो बेटी ने उसका ध्यान आकृष्ट किया और बोली दिखाई दिया बापू, जिस ओर घडे से जल बूंद बूंद गिर रहा है उस ओर हरी घास की एक पतली से हरी रेखा सी खिंच गई है। सुखिया ने देखा और बोला हॉ, अरे वाह।यहां तो लंबी सी हरी घास की पंक्ति तैयार हो रही है। चलो इस बूंद बूंद ने कहीं तो जीवन दिया ।

रात्रि की नीरवता में सुखिया की बेटी ने विचार किया कि घडे से जल का अपव्यय तो हो रहा था पर उस घास की पंक्ति ने आशा की एक किरण जगा दी । दूर कोने में कई महीनों से वह मंदिर के फुलों को एकत्रित कर रही थी वह सूख कर बिखर गए थे उसे ध्यान आया कि अगर ये फुल के बीज वह साथ ले तो कुछ अतिरिक्त कमाई करवा सकती है।

सुबह सुखिया ने देखा कि आज उसकी बेटी उससे पहले जाग चुकी है और दोनों पिता पुत्री नदी की ओर बढ चले। घडों में जल भर कर सुखिया चला तो पीछे पीछे पुत्री ने वह हरी घास की रेखा व बूंद बूंद जल के साथ फुलों के बीज बिखेरना प्रारंभ कर दिया पिता ने चलते चलते पुकारा भी कि- बेटी क्या कर रही हो। पर बेटी ने आवाज को अनसुना कर चलते चलते फुलों के सारे बीज बीखेर दिए

अब भविष्य की ओर टकटकी लगाए वह घर आ गई।

का सुखदा नहीं से जल लाना अनवरत जारी रहा। धीरे धीरे एक माह गुजर गया। आज जब वह जल भरने के लिए उठा तो बेटी ने कहा- बापू स्कूल खुल रहे हैं, मैं भी स्कूल जाउगी। सुखिया ने कहा- जो चार पैसे मिलते है, उससे जैसे तैसे पेट भर पाता है, ऐसे में स्कूल का खर्चा कहां से आएगा। फिर दोनों चल पडे और जल भरकर सुखिया ने जैसे ही पगडंडी की राह पकडी तो उसने देखा कि जिस बांयी ओर के घडे से पानी बूंद बूंद रिसता है वहां घास के साथ फुलों की एक पंक्ति भी तैयार हो गई है। सुखिया ने देखा उसकी बेटी ने थैले में फुलों को तोड तोड कर रखना शुरू कर दिया और देखते देखते उसका थैला फुलों से भर गया। उसकी बेटी फुल नहीं मानों भविष्य के सपने चुन रही हो।

घर पर जब पहुंचे तो आज बाजार में फुलों की कमाई भी साथ थी। सुखिया की बेटी ने जब विस्तार से फुलों की बात बताई तो बेटी की बुध्दिमता से वह गर्व से भर उठा और बोला- बेटी सच में घर की लक्ष्मी होती है। चलो कल स्कूल चलकर बात करेंगे। बेटी भी खुशी से फुली नहीं समाई।

अगले दिन अलसुबह जब सुखिया पानी भरने निकला तो वह अकेला था बेटी स्कूल जाने की तैयारी में मगन थी। आज उसने नदी से शीघ्र घडों को भरा और चल पडा आज फिर बायीं ओर के घडे से रिसते पानी ने कई फुलों को फिर खिलने का मौका दिया और उन्हें वह निहारता आगे बढ चला, फुलों की वह पंक्ति उसका , उसके श्रम का मानों स्वागत सी करती लगती थी और घर पहुंचने पर उसने पाया कि एक और फुल जो उसके घर में खिला था उसकी बेटी के रूप में वह मन ही मन सोचने लगा कि वह घडा जो रिस रहा था पर उसका देने का प्रतिफल है कि उस बाये घडे की ओर समृध्दि छा गई जो घडा ना दे सका उसकी ओर शुष्कता ही रह गई।

खुशी के फुल खिल गए----

विनय कुमार सक्सेना
वरि.पुस्त. एवं सूचना सहायक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

****

राजभाषा पखवाडा का संक्षिप्त विवरण

दिनांक 15 सितम्बर 2016 को मुख्यालय में आयोजित राजभाषा पखवाडा के उदघाटन समारोह में सीम्स अस्पताल, नागपुर के वरिष्ठ न्यूरोसर्जन डॉ. लोकेन्द्र सिंह, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । डब्ल्यूसीएल के अध्यक्ष - सह - प्रबंध निदेशक श्री राजीव रंजन मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में डॉ. संजय कुमार, निदेशक (कार्मिक), श्री एस.एम. चौधरी, निदेशक (वित्त) व श्री टी .एन. झा, निदेशक (तकनीकी/योजना परियोजना), तात्कालिक महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं राजभाषा प्रमुख श्री अजीत कुमार सिंह , वरिष्ठ अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण प्रमुखता से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ . लोकेन्द्र सिंह ने खुले दिल से हिंदी का प्रयोग करने का संदेश

राजभाषा विविधा

दिया। डॉ . संजय कुमार ने माननीय कोयला राज्यमंत्री, भारत सरकार श्री पीयूष गोयल के संदेश का वाचन किया । इस अवसर पर श्री टी .एन. झा, निदेशक (तकनीकी/योजना परियोजना) ने भी राजभाषा के संवर्धन पर जोर दिया एवं कर्मियों को सम्बोधित किया । कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं अध्यक्ष - सह- प्रबंध निदेशक श्री राजीव रंजन मिश्र ने कहा कि हमें अपने कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिन्दी के शब्दों का समावेश करना चाहिए । उन्होंने वेकोलि में राजभाषा के संवर्धन में किये जा रहे प्रयासों की सराहना की ।

डॉ. मनोज कुमार , सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने पॉवर प्वाइंट प्रेजेंटेंशन के माध्यम से वर्ष 2015-16 के दौरान डब्ल्यूसीएल में राजभाषा हिंदी को बढावा देने के लिए किये गये कार्यों तथा उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण किया । कार्यक्रम का संचालन श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह , सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क) ने किया और डॉ. मनोज कुमार, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया।

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
प्रथम	श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह	सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क)	जनसंपर्क विभाग
द्वितीय	श्री विजय कुमार झा	वरिष्ठ प्रबंधक (जनसंपर्क,मासंवि)	मासंवि
तृतीय	श्रीमती मनीषा सहस्त्रबुध्दे	वरिष्ठ लिपिक	विक्रय लेखा
चतुर्थ	श्रीमती दिव्या शर्मा	वरिष्ठ अनुवादक (राभा/औसं)	औसं
पांचवां	श्री विवेक कुमार सिंह	उप प्रबंधक (कार्मिक)	नि.(का) कार्यालय

दिनांक 16.09.2016 को आयोजित तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में विभिन्न विषयों की पर्चियों में से एक पर्ची निकालकर उसमें लिखे विषय पर प्रतिभागियों द्वारा अपने विचार व्यक्त किये गए। यह प्रतियोगिता काफी रोचक रही। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री मार्कंडेय मिश्रा, श्री एन.बी. सक्सेना तथा डॉ . मनोज कुमार थे।

निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 19.09.16 को आयोजित निबंध प्रतियोगिता में निम्नलिखित दो विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखने को कहा गया :-

क) हम हिंदी वाले कहीं हिंदी के दुश्मन तो नहीं ।

ख) हर नई पीढी पिछली पीढी से बेहतर होती है ।

इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री आर.सी. गुप्ता, श्री सुरेन्द्र शर्मा एवं श्रीमती निर्मल सुरेन्द्रन थीं।

स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
प्रथम	श्री सुरेन्द्र खरे	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	चिकित्सा
द्वितीय	श्री राज कुमार वर्मा	सहायक प्रबंधक (सिविल)	सिविल
तृतीय	श्री दीपक सिंह चौहान	केटेगरी -1 (जनसंपर्क)	जनसंपर्क
चतुर्थ	श्री आलोक कुमार	सहायक प्रबंधक (सामग्री प्रबंधन)	सामग्री प्रबंधन
पांचवां	श्रीमती दिव्या शर्मा	वरिष्ठ अनुवादक (राभा/औसं)	औसं

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

दिनांक 20.09.2016 को आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में हिंदी सहित अनेक विषयों से संबंधित सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पत्र तैयार किया गया था। प्रतियोगिता में कर्मियों की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी।

इस प्रतियोगिता के संयोजक डॉ . ए.के. रैना, श्री तरूण पालीवाल व श्री सुनील लिंगलवार थे।

स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
प्रथम	श्री आलोक कुमार	सहायक प्रबंधक (सामग्री प्रबंधन)	सामग्री प्रबंध
द्वितीय	श्री सचिन गर्ग	प्रबंधन प्रशिक्षु ◌ (औधोगिक अभियांत्रिकी)	आईईडी
तृतीय	श्री राज कुमार वर्मा	सहायक प्रबंधक (सिविल)	सिविल
चतुर्थ	श्री संदीप कुमार	सहायक प्रबंधक (प्रणाली)	प्रणाली
पांचवां	श्री दिलीप कनोजिया	वरिष्ठ निजी सहायक (राजभाषा)	मासंवि

स्व-रचित काव्य प्रतियोगिता

दिनांक 21.09.16 को आयोजित स्व - रचित काव्य प्रतियोगिता में मुख्यालय के कर्मियों ने अलग-अलग विषयों पर अपनी स्व - रचित रचनाएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम में हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर के हिंदी अध्यापक श्री सोमपाल सिंह निर्णायक के रूप में विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रतियोगिता के संयोजक डॉ . मनोज कुमार, श्री एस.पी. सिंह व श्रीमती दिव्या शर्मा थीं।

स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
प्रथम	श्री विजय कुमार झा	वरिष्ठ प्रबंधक (जनसंपर्क/मासंवि)	मासंवि
द्वितीय	श्री आशीष तायल	उप प्रबंधक (जनसंपर्क)	जनसंपर्क
तृतीय	श्री प्रकाश भट्ट	कार्यालय अधीक्षक (राजस्व)	राजस्व
चतुर्थ	श्री राजेश चौरागडे	लिपिक (विधुत एवं यांत्रिकी)	विधुत एवं यांत्रिकी
पांचवां	श्री एन. बी. सिंह	वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक/औसं)	औसं

स्कूल के बच्चों के लिए प्रतियोगिता

नागपुर तेलंगखेडी स्थित भारती कृष्ण विधा विहार स्कूल में दिनांक 22.09.2016 को अलग - अलग कक्षाओं के विधार्थियों में प्रतियोगिता आयोजित की गई। स्कूल के विधार्थियों से हिंदी तथा अन्य समसामायिक विषयों से संबंधित प्रश्न पूछे गए और सही उत्तर देने वाले विधार्थियों को उसी समय पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर स्कूल की प्राचार्या श्रीमती जे.वी. नागलक्ष्मी देवी तथा शिक्षकगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री मनोज कुमार , श्री दिनेश टेंभुर्णे तथा श्री तरूण पालीवाल द्वारा किया गया।

स्लोगन प्रतियोगिता

दिनांक 23.09.16 को आयोजित स्लोगन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को निम्नलिखित विषयों पर दो - दो पक्तियों के स्लोगन लिखने को कहा गया :-

क) हिंदी भाषा ख) पर्यावरण ग) शांति घ) स्वच्छता एवं ड) राष्ट्रीय एकता

इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री डी.पी. बरखे, श्री डी.के. फुलमारे, श्री नागेन्द्र सिंह व श्री गणेश पराते थे।

स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
प्रथम	श्रीमती दिव्या शर्मा	वरिष्ठ अनुवादक (राभा/औसं)	औसं
द्वितीय	श्री सचिन गर्ग	प्रबंधन प्रशिक्षु (औधोगिक अभि)	औधोगिक अभि.
तृतीय	श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह	सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क)	जनसंपर्क
चतुर्थ	श्री दीपक सिंह चौहान	केटेगरी - 1 (जनसंपर्क)	जनसंपर्क
पांचवां	श्री राज कुमार वर्मा	सहायक प्रबंधक (सिविल)	सिविल

राजभाषा विभाग

टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषियों के लिए दिनांक 23.09.16 को टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यालय में सामान्यतया प्रयोग होने वाले छोटे-छोटे अंग्रेजी वाक्यांशों को हिंदी में लिखने को कहा गया। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री डी.पी. बरखे, श्री डी.के. फुलमारे, श्री नागेन्द्र सिंह व श्री गणेश पराते थे।

क्रसं	स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
1	प्रथम	श्री के के तन्ना	वरिष्ठ इंडेंटिंग सहायक (सीएमसी)	सीएमएसी
2	द्वितीय	श्रीमती अन्नमा चाको	वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक/ईई)	अधिकारी स्थापना
3	तृतीय	श्री जार्ज जॉन	वरिष्ठ निजी सहायक (सतर्कता)	सतर्कता
4	चतुर्थ	श्री डी सनमुखराम	वरिष्ठ निजी सहायक (विधि)	विधि
5	पांचवां	श्री वी पी जोबि	वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक/विधि)	विधि

प्रश्न मंच

दिनांक 26.09.16 को आयोजित प्रश्न मंच को हर वर्ष की भांति मुख्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भारी प्रतिसाद मिला। पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते समय कर्मियों में भारी उत्साह था। हिंदी, समसामेयिक विषय, सामान्य ज्ञान, आदि से संबंधित प्रश्न पूछे गए। सही उत्तर देने वाले कर्मचारियों को उसी समय पुरस्कार प्रदान किए गए। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री एन .बी. सिंह, श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह व डॉ. मनोज कुमार थे।

अंताक्षरी प्रतियोगिता

दिनांक 27.09.16 को हिंदी सिनेमा के पुराने और नए गानों के मुखडे /अंतरे के साथ तीन वर्गों में अंताक्षरी प्रतियोगिता हुई। ऑडियो-विजुअल के माध्यम से भी इस प्रतियोगिता को आकर्षक बनाया गया। इस प्रतियोगिता के आयोजन में निपुण व ज्ञाता श्री एस.एल.जोशी (सेवा निवृत्त) ने शानदार तरीके से इस प्रतियोगिता को सम्पन्न कराया। उन्हें श्री प्रसन्न्ाि बारलिंगे व श्रीमती मनीषा सहस्त्रबुध्दे ने अच्छा सहयोग दिया।

स्थान	नाम	पदनाम	विभाग
प्रथम	श्रीमती वीणा येरगुरवार श्रीमती मेघा पुजारी	केटेगरी - 1 प्यून	योजना एवं परियोजना
द्वितीय	श्री के के तन्ना श्री पी एच अडुलकर	वरिष्ठ इडिंटिंग सहायक वरिष्ठ निजी सहायक	सीएमसी जनसंपर्क
तृतीय	श्री आर सी गुप्ता श्री एस व्ही रामगोपाल	वरिष्ठ प्रबंधक (उत्खनन) वरिष्ठ निजी सहायक	उत्खनन विभाग जन सूचना

राजभाषा कार्यशाला

हिंदीतर भाषी जेन-नेक्स्ट अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए मुख्यालय में दिनांक 28.09.16 को राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें मुख्यालय सहित वेकोलि के क्षेत्रों के कुल 29 हिंदीतर भाषी Genext अधिकारियों ने भाग लिया । कार्यशाला में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के साथ - साथ कार्यालय में प्रयोग होने वाले अंग्रेजी वाक्यांशों के हिंदी पर्याय की जानकारी दी गई। इस कार्यशाला के संयोजक श्री विजय कुमार झा, श्री मनोज कुमार व श्रीमती रितु सिंह थीं। इस कार्यशाला में राजभाषा नियम, अधिनियम, टिप्पणी आलेखन , सूचना प्रौधोगिकी और राजभाषा, जन संचार माध्यम एवं राजभाषा जैसे सामयिक विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

कंपनी स्तरीय स्व - रचित काव्य स्पर्धा

स्थान	नाम	पदनाम	क्षेत्र
प्रथम	श्री गजेन्द्र तंवर	सहायक प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)	वणी नार्थ क्षेत्र
द्वितीय	श्री प्रविण ठाकुर	उप प्रबंधक (वित्त)	कन्हान क्षेत्र
तृतीय	श्री विजय कांत साठे	वरिष्ठ मैकेनिक (उत्खनन)	बल्लारपुर क्षेत्र
चतुर्थ	श्री अखिल द्रविड	वरिष्ठ लिपिक (राजभाषा)	माजरी क्षेत्र
पांचवां	श्रीमती आशा उडकुडे	ट्रिपमैन (प्रशिक्षु)	चन्द्रपुर क्षेत्र

दिनांक 29.09.16 को मुख्यालय में कंपनी स्तरीय स्व-रचित काव्य प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें मुख्यालय और डब्ल्यूसीएल के क्षेत्रों में सम्पन्न हुई स्व-रचित काव्य प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री आर.सी. गुप्ता, श्री चेतन लाल यादव व श्रीमती दिव्या शर्मा थीं। इस अवसर पर बाहरी निर्णायक के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार श्री अविनाश बागडे विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राजभाषा पखवाडा का पारितोषिक वितरण एवं समापन समारोह

दिनांक 29.09.16 को मुख्यालय में राजभाषा पखवाडा का पारितोषिक वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में श्री टी .एन. झा, निदेशक (तकनीकी/योजना एवं परियोजना) तथा श्री एस.एम. चौधरी, निदेशक (वित्त) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं राजभाषा प्रमुख श्री इकबाल सिंह सभी विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं राजभाषा प्रमुख श्री इकबाल सिंह ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में कंपनी स्तर की स्व- रचित काव्य प्रतियोगिता के विजेताओं द्वारा अपनी स्व -रचित कविता का प्रस्तुतीकरण किया गया , जिसकी सभी ने सराहना की। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक (वित्त) श्री एस.एम. चौधरी ने कहा कि आज के दौर में तकनीकी विभागों के कर्मी भी हिंदी में कार्य कुशलतापूर्वक कर सकते हैं। इस अवसर पर श्री टी .एन. झा, निदेशक (तकनीकी/योजना एवं परियोजना) ने कहा कि संचार साधनों के माध्यम से हिंदी को बहुत अधिक बल मिल रहा है। हमें भी अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को अधिक से अधिक बढावा देना चाहिए। तत्पश्चात सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथियों द्वारा नकद पारितोषिक राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके अलावा तीन समूहों में सर्वाधिक हिंदी पत्राचार के लिए मुख्यालय के विभागों, हिन्दी में सर्वाधिक डिक्टेशन के लिए मुख्यालय के अधिकारियों तथा " क" और "ख" क्षेत्रों में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए डब्ल्यूसीएल के दो क्षेत्रों को राजभाषा शील्ड /प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है।

“ क “ और " ख ” क्षेत्र से प्रथम स्थान पाने वाले वेकोलि के क्षेत्र

क क्षेत्र पाथाखेडा क्षेत्र

राजभाषा शील्ड

ख क्षेत्र वणी क्षेत्र

राजभाषा शील्ड

सर्वाधिक डिक्टेशन/हिंदी पत्राचार अधिकारी वर्ग	प्रथम	डॉ. बेला भट्टाचार्य, चिकित्सा सेवा प्रमुख	राजभाषा शील्ड
	द्वितीय	श्री आशीष तायल, उप प्रबंधक (जनसंपर्क)	राजभाषा शील्ड
	तृतीय	श्री रमेश सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)	राजभाषा शील्ड
	चतुर्थ	श्री प्रमोद चौधरी, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रणाली)	प्रशस्ति पत्र्
	पांचवां	श्री समीर बारला, वरिष्ठ प्रबंधक (सतकर्ता)	प्रशस्ति पत्र

कार्यक्रम का संचालन श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह , डॉ. मनोज कुमार व श्रीमती दिव्या शर्मा ने किया।

	स्थान	विभाग	पारितोषिक
1 से 2000 तक हिंदी पत्राचार	प्रथम	योजना/परियोजना	राजभाषा शील्ड
	द्वितीय	माइन्स रेस्क्यू	राजभाषा शील्ड
	तृतीय	एमआईएस	राजभाषा शील्ड
	चतुर्थ	सुरक्षा	प्रशस्ति पत्र
	पांचवां	डब्ल्यूटीआई, वर्धा	प्रशस्ति पत्र
2001 से 5000 तक	प्रथम	जनसंपर्क	राजभाषा शील्ड
	द्वितीय	एसटीआई, छिन्दवाडा	राजभाषा शील्ड
	तृतीय	उत्खनन	राजभाषा शील्ड
	चतुर्थ	सीएमसी	प्रशस्ति पत्र
	पांचवां	विधुत एवं यांत्रिकी	प्रशस्ति पत्र
5001 से अधिक हिंदी पत्राचार	प्रथम	मासवि	राजभाषा शील्ड
	द्वितीय	चिकित्सा	राजभाषा शील्ड
	तृतीय	औधोगिक संबंध	राजभाषा शील्ड

राजभाषा विभाग

नराकास प्रतियोगिता में दिए गए दोनों चित्र